



DEBUT · BEGINNING

13

A WINTER MAGIC

A WINTER MAGIC

Ferdinando Frega

जिलेट: सर्दियों का एक जादू

भूमध्य सागर के एक गर्म शहर ने, इटली की सरहदों के भीतर, इकसठ साल मुझे पनाह दी थी: एक बेचैन देह जो अपना असली आयाम खोज रही थी, और एक मन जो पहले से ही अमेरिका में जी रहा था।

मेरा अमेरिका। वह जो मुझे रुला देता था जब भी मैं उसका झंडा देखता, और मेरी धड़कन को नामुमकिन ढंग से तेज़ कर देता था। वह जो एक दिन मुझे पनाह देगा, अपनी ज़मीन की गहराइयों में मेरा स्वागत करने की राह देखता हुआ।

उसी दिन मुझे अपनी बुआ का फ़ोन आया। उन्होंने बताया कि मेरे दादा-दादी गुज़र गए हैं। बुढ़ापा।

तीन सौ किलोमीटर हमारे बीच थे, पर कोई चीज़ और कोई इंसान मुझे रोक नहीं सकता था। मैं अपनी गाड़ी में बैठा और चल पड़ा। चार घंटे बाद, मैं पहुँच गया।

घर बंद था। एक पड़ोसन ने, मुझे देखते ही, दुआ-सलाम की और कॉफ़ी के लिए भीतर बुलाया। पर मेरा वक्त उसके लिए नहीं था।

घर की चाबियाँ हमेशा मेरे पास रहती थीं। फ़ेगा लोगों की एक ख़ास फ़ितरत: समस्या को रोक लेना हमेशा बेहतर है, बजाय इसके कि बाद में हल ढूँढ़ना पड़े। हम ऐसे ही थे।

मैं भीतर गया। मुझे अब भी घर की गंध आ रही थी, कमरों की, अलमारियों की, रसोई की, और उस अँगीठी की जिसने 1977 की सर्दियों में मेरा साथ दिया था, जब मैं बस बारह साल का था। जो कुछ जा चुका था, वह अब वहाँ नहीं था। पर यादें अब भी वहीं थीं।

सहज वृत्ति ने मुझे अटारी की तरफ़ खींचा।

दो नन्हे चूहों ने मेरा स्वागत किया। ज़रा भी डरे हुए नहीं। वे वहाँ ऐसे थे मानो मेरा ही इंतज़ार कर रहे हों, मानो उन्हें मुझे किसी चीज़ तक ले जाना हो।

वे मुझे गत्ते के एक सूटकेस तक ले गए, बंद, धूल की मोटी परत से ढका हुआ।

जिज्ञासा ने मुझे उसे खोलने पर मजबूर किया। दोनों चूहे संतुष्ट दिखे, मानो उन्होंने कोई काम पूरा कर लिया हो।

भीतर, मुझे एक कॉपी मिली।

एक अनोखी लिखावट, पूरी की पूरी छापे के अक्षरों में, जिसे पहचानने में भूल हो ही नहीं सकती। वह मेरे पिता की थी।

एक कहानी पर तारीख पड़ी थी: 21 फ़रवरी 1955। संयोग से, ठीक मेरे जन्म का दिन — बस साल अलग था। उन्होंने वे पंक्तियाँ मेरे दुनिया में आने से दस साल पहले लिखी थीं।

वे ईश्वर को लिख रहे थे।

उन्होंने एक परिवार माँगा था, एक पत्नी, और बच्चे। और एक खास तौर पर: एक लड़का। वे उसका नाम फर्दिनांदो रखेंगे, अपने पिता के नाम पर। पर उनकी माँग यहीं खत्म नहीं होती थी।

मैं फूट-फूटकर रोने लगा। मुझे डर था कि कॉपी भीग जाएगी, तो मैंने बिना आँसुओं वाली सिसकी का मोड लगा लिया। वही जो मैं ज़िंदगी में सिर्फ़ औरतों के सामने बरतता था — उनसे हथियार डलवाने के मेरे तरीक़ों में से एक, धोखा देने के मेरे तरीक़ों में से एक। मैं फ़ेगा हूँ।

वे अपना बेटा कैसा चाहते थे, इसका उनका ब्योरा बारीक था। और, बात को लंबा खींचे बिना, आख़िर में मैंने उसमें खुद को पाया। जो मैं हूँ।

और वह उन पलों में से एक था जब मैंने खुद से एक ही सवाल पूछा:
मेरे पिता कौन थे?

बाक़ी काम वंशावली ने कर दिया। क्योंकि उस सवाल के साथ, मेरे उपनाम के साथ, मैं जो हूँ उसके साथ, लोग आज हमेशा एक ही बात पूछते हैं:
फ़ेगा असली हैं, या ठग हैं? थोड़े-थोड़े दोनों। हम फ़ेगा हैं।

मेरे पिता ने ईश्वर से एक बेटा माँगा।

ईश्वर ने माँग पूरी कर दी।

पर डिलीवरी ग़लत हो गई।

मॉडल अमेरिकी था।

पहुँचा इटली में।

नांदो